International Journal of Education and Science Research
Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-3, Issue-1 February- 2016 P-ISSN 2348-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

अध्यापकों की अध्येता बाल अधिकारों के प्रति अभिवृत्ति का सामाजिक समरसता पर प्रभाव का अध्ययन

डॉ. श्याम सुन्दर कौशिक
शोध निर्देशक
जे. जे. टी.यूनिवर्सिटी,चुडैला
राजस्थान

मुकेश कुमार
पी–एच.डी. (छात्र)
जे. जे. टी.यूनिवर्सिटी,चुडैला
राजस्थान

प्रस्तावना –

शिक्षकों से यह आशा की जाती है कि वह समाज के सभी वर्गों तथा समुदाय के लोगों के प्रति समान भावना रखें तथा सभी परिस्थिति में समाज के साथ एक रस हो जाए। समाज के बदलते नजरिये, बदलते जीवन मूल्यों का प्रभाव शिक्षा जगत पर पड़ा है आज का शिक्षा जगत भी एक व्यावसायिक तन्त्र का रूप लेता जा रहा है।

आधुनिकीकरण, पाश्चात्यीकरण, तकनीकीकरण, वैश्वीकरण, निजीकरण आदि का भी शिक्षक जगत एवं शिक्षक के स्वरूप तथा भूमिका पर व्यापक प्रभाव पड़ा है। इस निमित्त आधुनिक अध्यापकों की सामाजिक समरसता आदि तथ्यों में भी बड़ा भारी परिवर्तन आया है। शिक्षकों में सामाजिक समरसता की भावना का विकास हो ताकि आने वाली पीढ़ी सामाजिक समरसता का अनुकरण कर सके, तथा यदि हम चाहते हैं कि अध्यापन के क्षेत्र में योग्य, चरित्रवान विद्वान आयें और टिके रहे तथा व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्ध रहें तो इसे वेतनमान तथा अन्य सुविधाओं की दृष्टि से प्रथम कोटि का बनाना होगा, तभी शिक्षकों में व्यवसाय के प्रति उचित दृष्टिकोण, तथा व्यवसायिक प्रतिबद्धता का विकास हो पायेगा।

इस प्रकार शोधकर्ता ने अध्यापकों की अध्येता बाल अधिकारों के प्रति अभिवृत्ति का सामाजिक समरसता पर पड़ने वाले प्रभाव के बारे में विस्तारपूर्वक अध्ययन कर सोचा कि –

अध्यापक–अध्यापिकाओं की अध्येता के बाल अधिकारों के प्रति अभिवृत्ति में क्या अन्तर है? अध्यापक–अध्यापिकाओं की अध्येता के बाल अधिकारों के प्रति अभिवृत्ति का सामाजिक समरसता के साथ क्या सम्बन्ध है? उक्त सभी प्रश्नों के समाधान हेतु शोधकर्ता ने ***''अध्यापकों की अध्येता बाल अधिकारों के प्रति अभिवृत्ति का सामाजिक समरसता पर प्रभाव''*** विषय पर शोध करने का निर्णय लिया।

अध्ययन का महत्व :–

सामाजिक समरसता अध्यापकों में सामाजिक पुंजी के साथ–साथ उनका सामाजिक सम्पर्क भी और साथ वे सामाजिक समृद्धि में सम्पन्नता को ग्रहण करते हैं। यह वैचारिक एवं सैद्धान्तिक द्वन्द्व को नकारती है और वैज्ञानिक विचारों का सामाजिक सामजस्य बढ़ाती है।

सामाजिक समरसता अध्यापकों में समाज के प्रति प्रगाढ़ आस्था एवं विद्यर्थियों एवं उनके अभिभावकों से आपसी सम्पर्क बनाकर उनसे मेलजोल एवं सहभागिता तथा सहयोग को बढ़ाने में सहयोग करती है। जिससे अध्यापकों के सामाजिक व्यवहार में विकास होता है और व्यक्तित्व का सामाजिक पक्ष सुदृढ़ होता है।

जिस प्रकार बालकों का पालण–पोषण या देखभाल की जायेगी, उसी के अनुरूप उनका विकास सम्भव है। यदि बालक को उचित वातावरण एवं समुचित जीवनोपयोगी सुविधाऐं प्रदान की जाये तो बालक का सर्वांगीण विकास होगा तथा मानव जाति के कल्याण का मार्ग प्रशस्त होगा। बालकों का विकास न केवल एक राष्ट्र बल्कि सम्पूर्ण विश्व के लिए हितकर सिद्ध होता है, क्योंकि आज का बालक भविष्य का एक जिम्मेदार नागरिक होता है। प्रत्येक मनुष्य के लिए मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति होना अति आवश्यक है। भोजन, वस्त्र तथा आवास जीवन के लिए महत्त्वपूर्ण ही नहीं बल्कि अति आवश्यक भी है।

बालक जिस प्रकार के परिवार में रहता है वह उसका प्रत्यक्षीकरण करता है तथा प्रत्यक्षीकरण की क्रिया द्वारा अपने व्यवहार में परिवर्तन लाता है। जिन परिवारों की सुख–शान्ति, परिवारिक कलह, मतभेद, पृथक्करण तथा तलाक आदि कारणों से भंग हो जाती है उन परिवारों के बच्चे अधिक शिक्षा अर्जित नहीं कर पाते हैं। जो माता–पिता अपने बच्चों के सुख–दुख में प्रतिभाग करते हैं तथा उनके साथ आनन्दमयी, समय व्यतीत करते हैं उनके बच्चों की अच्छी उपलब्धि प्राप्त

करने की संभावना रहती है। सामान्यतः यह देखा गया है कि भारत वर्ष में जो माता–पिता निर्धन व शिक्षित हैं वे अपने बच्चों के भविष्य के बारे में नहीं सोचते हैं, वे अनुभव करते हैं कि बच्चों को शिक्षित करने का दायित्व उन्हें स्कूल में प्रवेश कराने पर ही समाप्त हो जाता है। बच्चों की शिक्षा पर उचित ध्यान न देने के कारण उनकी शैक्षिक प्रक्रिया असफल होने लगती है फलस्वरुप उनकी उपलब्धि प्रभावित होती है। जो बालक घर से अनिच्छापूर्वक स्कूल जाता है या धकेला जाता है, वह बालक संवेदन शून्य रहता है।

उपर्युक्त सभी बातों को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता ने अध्यापकों की अध्येता बाल अधिकारों के प्रति अभिवृत्ति का सामाजिक समरसता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करने का निर्णय लिया है। इस प्रकार का अध्ययन कार्य आज तक बहुत ही कम हो पाया है।

अध्ययन का औचित्य :–

वर्तमान समय में न केवल भारत बल्कि सम्पूर्ण विश्व में बालकों से जुड़ी विभिन्न समस्यायें हमारे समक्ष विद्यमान है। बालकों के विकास के लिए आवश्यक है उनसे सन्दर्भित समस्याओं को प्रत्येक व्यक्ति समझकर समाधान करने के प्रयास करे। बच्चें भविष्य के निर्माता होते हैं और यदि निर्माता ही समस्याग्रस्त हो तो हम समाज के उज्ज्वल भविष्य की कल्पना करें, यह असम्भव सा प्रतीत होता है। दुनियाभर में आज बालकों की समस्या को जानने, समझने एवं उनके निराकरण के प्रयास किये जा रहे है। बच्चों के अधिकारों के संरक्षण के लिये आवश्यक है समाज एवं राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति का रवैया इसके प्रति सकारात्मक हो तथा इनके पक्ष में प्रयास करने की प्रवृति जागृत हो इसके लिए आवश्यक है अध्यापक वर्ग इसके प्रति सचेत हो।

पूर्व में हुए अध्ययनों के अतिरिक्त इस दिशा में अलग–अलग चरों पर अनेक अध्ययन सम्पादित हुए, लेकिन ***''अध्यापकों की अध्येता बाल अधिकारों के प्रति अभिवृत्ति का सामाजिक समरसता पर प्रभाव''*** विषय पर अभी तक कोई कार्य नहीं हुआ है। यह कार्य एक नवाचार शैक्षिक लक्ष्य पर विद्यालय उपयोगी, समाज उपयोगी, अध्यापक उपयोगी एवं विद्यार्थियों के लिए फलदायी होगा, जिससे हम अध्यापकों की अध्येता बाल अधिकारों के प्रति अभिवृत्ति के स्तर का पता लगाने एवं इस अभिवृत्ति का सामाजिक समरसता पर क्या प्रभाव पड़ता है, का पता लगाने में सफल हो सकेंगे। किसी भी अध्ययन की सार्थकता उसकी आवश्यकता के स्वरूप एवं उपयोगितात्मक पहलुओं पर निर्भर करती है। साथ ही इस संदर्भ में यह देखा जाता है कि अध्ययन समाज को क्या नई दिशा देने वाला है। उपर्युक्ता मानक रूपी दृष्टिकोण को मध्यनजर रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन सार्थक एवं औचित्यपूर्ण है, क्योंकि बाल अधिकार आज के समय की महत्वपूर्ण आवश्यता है।

समस्या कथन :–

''अध्यापकों की अध्येता बाल अधिकारों के प्रति अभिवृत्ति का सामाजिक समरसता पर प्रभाव का अध्ययन''

अध्ययन के उद्देश्य :–

1. अध्येता के बाल अधिकारों के प्रति अध्यापकों की अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
2. अध्यापकों की सामाजिक समरसता का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ :–

1. अध्येता के बाल अधिकारों के प्रति अध्यापकों की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. अध्यापकों की सामाजिक समरसता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

न्यादर्ष :–

प्रस्तुत अध्ययन में राजस्थान राज्य के झुंझनूं जिले के माध्यमिक स्तर के 100 अध्यापकों तथा 500 अध्येताओं को न्यादर्श के रूप में लिया गया है।

शोधविधि :–

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है क्योंकि अनुसंधान की यह एक वैज्ञानिक विधि है। इस विधि द्वारा प्राप्त निष्कर्ष वैध एवं विश्वसनीय होते हैं।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण :–

बाल अधिकारों के प्रति अभिवृत्ति मापनी :–

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता द्वारा स्वनिर्मित बाल अधिकार मापनी का प्रयोग किया गया है।

सामाजिक समरसता :–

शोधकर्ता अपने अपने अध्याय में शिक्षकों की सामाजिक समरसता देखने के लिए स्वनिर्मित मापनी का प्रयोग किया है।

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी मध्यमान ;डद्धए प्रमाणिक विचलन ;क्द्ध एवं ब्त्ए टंसनम की गणना की जायेगी।

समंकों का सारणीयन एवं विष्लेशण :–

प्रस्तुत षोधकार्य में अनुसंधानकर्ता ने संकलित एवं व्यवस्थित आंकड़ों का विष्लेशण जिस प्रकार किया है, उसका परिकल्पनानुसार विवरण निम्न प्रकार है –

सारणी संख्या – T.IV.1

अध्येता के बाल अधिकारों के प्रति पुरूश एवं महिला अध्यापकों की अभिवृत्ति के फलांको के सम्बन्ध में मध्यमान अन्तर की सार्थकता

अध्यापक	**संख्या (N)**	**माध्य (Mean)**	**मानक विचलन (S.D.)**	**क्रांतिक अनुपात मान (C.R..Value)**	**सार्थकता स्तर**	
					.05	**.01**
पुरूश अध्यापक	50	19.58	7.74	**2.95**		**सार्थक अन्तर हैं।**
महिला अध्यापक	50	20.48	6.29			

(df=N_1+N_2 &2=150+150&2=298)

विश्लेशण :–

उपर्युक्त सारणी में गणना द्वारा प्राप्त मान तालिका मान से अधिक है। इस आधार पर परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है। अर्थात् अध्येता के बाल अधिकारों के प्रति पुरूश एवं महिला अध्यापकों की अभिवृत्ति में सार्थक अंतर है।

सारणी संख्या – T.IV.2ध्यापकों की सामाजिक समरसता के फलांको के सम्बन्ध में मध्यमान अन्तर की सार्थकता

अध्यापक	**संख्या (N)**	**माध्य (Mean)**	**मानक विचलन (S.D.)**	**क्रांतिक अनुपात मान (C.R.Value)**	**सार्थकता स्तर**	
					.05	**.01**
पुरूश अध्यापक	50	7ण्01	1545	**1.03**	**सार्थक अन्तर नहीं हैं।**	
महिला अध्यापक	50	8ण्76	16ण्26			

विश्लेशण :–

उपर्युक्त सारणी में गणना द्वारा प्राप्त मान तालिका मान से कम है। इस आधार पर परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है। अर्थात् अध्यापकों की सामाजिक समरसता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शैक्षिक उपयोगिता :–

शिक्षक को समाज का एक प्रमुख अंग माना जाता है। इसलिए उसके सामाजिक व्यवहार अर्थात् सामाजिक समरसता की भावना वह चाहे समाज के प्रति हो, अभिभावको के प्रति हो, विद्यार्थियों के प्रति या विद्यालय में हो आदि को बहुत ही संज्ञान से देखा जाता है। शोध में सामाजिक समरसता के अध्ययन से षिक्षकों के सामाजिक समरसता का विकास होगा और अपने सामाजिक व्यवहार को समुन्नत करने का प्रयास होगा। शिक्षकों के सामाजिक व्यवहार से सम्बन्धित समस्याओं को समझने में सहायक होगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्रवाल, आई.पी. (1996) ''बाल विकास एवं शैक्षिक क्रियाएं'', आर्य बुक डिपो, करोल बाग, नई दिल्ली, पृश्ठ संख्या 141.146.
2. अरोड़ा, रीता एवं मारवाह, सुदेष (2001) ''शिक्षा मनोविज्ञान एवं सांख्यिकी'' 23, भगवान दास मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर, पृश्ठ संख्या – 43
3. अस्थाना, विपिन ;(1994) ''मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन और मूल्यांकन'', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–2 (उ.प्र.), पृश्ठ संख्या – 53
4. भार्गव, महेष (1993) ''आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण एवं मापन'' द्वितीय संस्करण, भार्गव बुक हाऊस, राजामण्डी, आगरा–2ए पृश्ठ संख्या – 24
5. भार्गव, उशा (1993) ''किशोर मनोविज्ञान'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर, पृ.सं.– 54, 55
6. भटनागर, ए.बी.य भटनागर मीनाक्षी (2004) ''शिक्षण व अधिगम का मनोविज्ञान'' आर.लाल. बुक डिपो, मेरठ, चतुर्थ संस्करण, पृश्ठ संख्या – 31, 54.
7. भटनागर, आर.पी. (2003) ''शिक्षा अनुसंधान'' इन्टरनेशनल पब्लिषिग हाऊस, मेरठ& 250001 पृ.स-120.
8. भटनागर, सुरेष (1993) ''अधिगम एवं विकास के मनोसामाजिक आधार'' इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस, मेरठ, चतुर्थ संस्करण, पृश्ठ संख्या & 128.

1.	www.timesonline.co.uk/news/politics/article5489213
2.	www.ohlininstitutet.org/isbn 978-91-976648-9-9
3.	www.google.com/Leadership Qualities-a / efo41898. pdf.
4.	www.google.com/spary, carole.pdf
5.	http://www.sagepub.co.uk/journalsPermissions.nav/Sociology
6.	www.jrf.org.uk/0545/pdf